P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-2* May- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

आज की राजनीतिक चेतना का स्वरूप रागदरबारी

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र ''आज की राजनीतिक चेतना का स्वरूप रागदरबारी'' में श्रीलाल शुक्ल द्वारा रचित उपन्यास रागदरबारी की वस्तुस्थिति राजनीतिक चेतना को आज की राजनीतिक चेतना में देखा गया है जिसके प्रतिबिम्ब आज भी वैसा ही है जैसा कि 62 साल पहले स्वतंत्रता के पश्चात् हमारे देश की जनता थी। आज की राजनीति और राजनेता दोनों के स्थितियों का विश्लेषण किया गया है। जिसके स्वरूपों को पाकर गणतंत्र पर इसका क्या प्रभाव पर रहा है। सुशासक के आधार पर ही सुव्यवस्थित राज्यों की स्थापना हो सकती है। इनकी प्रत्येक बिन्दुओं की विवेचना की गई है तथा इन स्थितियों से बचने का सुझाव भी दिया गया है।

मुख्य शब्द : राजनीतिक चेतना सुव्यवस्थित राजनेता सुत्यवस्थित राज्य सुशासन।

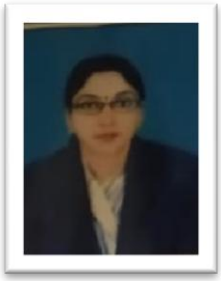

पूनम त्रिपाठी
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
ए0 पी. एस0 यूनिवर्सिटी,
रीवा, म0प्र0, भारत

प्रस्तावना

विश्व इतिहास पर दृष्टि डाली जाए तो राजनीति हमेशा से ही समाज पर हावी रही है। सत्ता सुख के लिए शासकों ने छल दंभ क्रूरता, अत्याचार आदि हथकण्डे को अपनाया है। शोषक और शोषित वर्गों की गाथा से हमारा साहित्य इतिहास भरा पड़ा है। यह विकृति समाज और लोकतंत्र में आज तक जारी हैं। ''साहित्य और राजनीति एक दूसरे से अलग नहीं परस्पर सम्बद्ध है दोनों एक ही सामाजिक प्रक्रिया के दो पहलू हैं। जीवन की एक महत्वपूर्ण दिशा है और इससे समाज, धर्म, अर्थतंत्र, सभी प्रभावित हुए हैं।'' 1) 15 अगस्त 1947 ई0 को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए भारत की बहुसंख्यक जनता ने कठोर संघर्ष किया हैं। अपने जातीय और साम्प्रदायिक भेदभाव को भूलकर एक जुटता का परिचय दिया है। बड़े उत्साह और मनोयोग के साथ देश का संविधान निर्मित हुआ। इसके अंतर्गत भारत संसदीय प्रणाली के तहत गणतंत्र के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। प्रथम आम चुनाव के बाद प्रत्येक राज्य की विधानसभाओं के साथ केंन्द्र में संसद अस्तित्व में आयी। अपने चुने हुए प्रतिनिधियों से देश की आमजनता में खुशहाली की उम्मीदें बलवती हुई जमींदारी उन्मूलन के माध्यम से खेतों पर काबिज काश्तकारों को जमीन दी गई संविधान की भूमिका में प्रस्तावित राज्य के नीति निर्देशक तत्वों के तहत बहुत से प्रदेशों में ग्राम पंचायत व्यवस्था कायम हुई हैं। इससे एक आशा और विश्वास का वातावरण समूचे देश में व्याप्त हुआ लेकिन ये सब सिक्के का एक पहलू मात्र है। उसका दूसरा पहलू पर्याप्त भिन्न है स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत की स्वाधीन सरकार ने मिश्रित अर्थव्यवस्था की आड़ में देश के विकास के लिए जो पूँजीवादी रास्ता अपनाया उससे देश की आम जनता की बदहाली बढ़ती गई। जिसके परिणाम स्वरूप भारतीय जनता का स्वतंत्रता के प्राप्ति मोहभंग हुआ। शासन सत्ता समाज से जनता एक बहुत बड़े समुदाय से कटकर एक अत्यंत सीमित वर्ग के हाथों में केन्द्रित हो गई। सेना, पुलिस नौकर शाही न्याय व्यवस्था आदि राजसत्ता पूँजीवादी व्यवस्था का अंग बनी जिसके परिणाम स्वरूप सुधार संबंधी काम अधूरे रह गए। लूटपाट साम्प्रदायिक दंगे आदि स्वतंत्रता के पर्याय बन गए। सभ्प्रदायवाद, जातिवाद, भाई–भतीजावाद को निजी ही नहीं, सार्वजनिक स्थानों से भी बढ़ावा मिला। इस आपाधापी, मनमानी का सर्वाधिक शिकार ग्रामीण क्षेत्र बने जिसका प्रतिबिंब श्री लाल शुक्ल ने अपने ''रागदरबारी'' उपन्यास में किया है। श्रीलाल शुक्ल को स्वातंत्रयोत्तर सामाजिक–राजनीति का गहन अनुभव था जिनके तथ्यों पर आगे विचार किया जाएगा कि रागदरबारी वर्तमान राजनीतिक चेतना का स्वरूप हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र का मूल उद्देश्य–

1. देश की आर्थिक सामाजिक सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिस्थितयों से जनता को अवगत करना तथा इनमें आए बदहाली के कारक तत्वों को बताना।

2. आज की राजनीतिक चेतना और राजनेता दोनों के स्वरूपों को जनता तक पहुँचाना जो चुनावी भाषाओं के बल पर जनता को ठगने का प्रयास कर रहे है।
3. राजनेता के चुनावी प्रक्रिया में परिवर्तन लाना जिसमें उम्मीदवारों की न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता को निर्धारण करना जिससे सुशिक्षित उम्मीदवार की चुनाव हो जो देश को सुव्यवस्थित चला सकें।
4. निष्पक्ष चुनाव के महत्त्व तथा इसको निष्पक्ष बनाने वाले कारको को जनता व सरकार तक पहुँचाना हैं।

श्रीलाल शुक्ल द्वारा विवेचित रागदरबारी उपन्यास में स्वतंत्रोत्तर भारत के राजनीतिक सामाजिक व्यवस्था के विसंगतियों का पर्दाफाश अपनी व्यंग्यात्मक शैली में अत्यंत कौशल के साथ किया है। इसका प्रकाशन वर्ष 1968 ई0 है, तथा 1970 ई0 में इसे साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। रागदरबारी व्यंग्यांत्मक कथा भले ही कही जाये परंतु यह हमारे मूल्यहीन कलुषित सामाजिक व्यवस्था का स्वच्छ प्रतिबिंब है। इसमें श्री लाल शुक्ल जी ने स्वतंत्रता के बाद भारत के ग्रामीण जीवन में मूल्यहीनता को परत–दरपरत उघाड़ कर रख दिया है। इनके उपन्यास का एक–एक पात्र अपनी व्यवस्था का प्रतीक है। गोपाल राय लिखते है कि– ''रागदरबारी उतर प्रदेश के पूर्वांचल के एक गाँव शिवपालगंज की कहानी हैः उस गाँव की जिन्दगी का दस्तावेज जो स्वतंत्रता–प्राप्ति के बाद ग्राम विकास और ''गरीबी घटनाओं के आकर्षक नारों के बावजूद घिसट रही है'' 2) रागदरबारी की कथा भूमि पर बड़े नगर से कुछ दूर बसे शिवपालगंज गाँव की है, जहाँ की जिन्दगी प्रगति और विकास के समस्त नारों के बावजूद निहित स्वार्थ और अनेक अवांछनीय तत्वों के आघातों के सामने घिसट रही है। यहाँ की पंचायत, कॉलेज की प्रबंध समिति और कोऑपरेटिव सोसाइटी के सुत्रधार वैद्यजी वह राजनीतिक संस्कृति है, जो प्रजातंत्र और लोकहित के नाम पर लोगों के आँखों में धूल झोंकते है। आज से पचास वर्ष पूर्व श्रीलाल ने अपने उपन्यास में जिस वैधजी को राजनीति के पीछे का मास्टरमाइंड बताये है, वह अपने वाक्य तैयार करने और उसके शब्दों को चुनने में माहिर है। शायद आज भी वह वैद्यजी हमारे भारतीय राजनीति में अपनी प्रतिनिधित्व किसी न किसी रूप में करते हुए नजर आ रहे हैं। विश्व का सबसे बड़ा लिखित संविधान भारत देश का है। हमारे संविधान में विश्व के चुनिंदे नीतियों को लिया गया है, जो देश और जनता की उन्नति के लिए है। प्रस्तुत संदर्भ मिथिलेश्वर जी के उपन्यास–''सुरंग में सुबह'' के आधार पर–''संसार में जो कुछ भी है, वह भारतीय लोकतंत्र में निहित है और भारतीय लोकतंत्र में जो नहीं है, वह संसार में कहीं नहीं है।'' ध्यातव्य हो कि आज हमारे देश के राजनेता हमारे देश और जनता के भलाई के लिए खाका पूर्ति करते आ रहे है। राजनेताओं की चेतना शब्दों और अक्षरों को परिभाषित करने में जुड़ी हुई हैं। कौन कितना अच्छा भाषण दे सकता है? इसकी होड़–सी लगी है।

रागदरबारी का रूप्पन बाबू वैद्यजी का छोटा बेटा है, जो कई साल से दसवीं कक्षा में है। वह छांमल विद्यालय इन्टर कॉलेज का छात्र नेता है, जहॉ के प्रबंधक वैद्यजी यानि उसके पिताजी है। वह सक्रिय रूप से गाँव के राजनीति में शामिल है। वैधजी का बड़ा बेटा अपने पिता के सहभागिता से दूर अपनी पहलवानी पर ध्यान देता है। रंगनाथ वैद्यजी का भतीजा है जो इतिहास से एम0 ए0 किया हैं, वह शहर से गाँवआया है। ऐसा प्रतीत होता है कि लेखक शिक्षित व्यक्ति की आँखों के माध्यम से गॉवों की दयनीय स्थिति को दिखाया हैं। प्रिंसिपल साहब छांमल विद्यालय इंटर कॉलेज के प्राचार्य है जो कॉलेज कर्मचारियों तथा अन्य सदस्यों के साथ उनका संबंध साजिश का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। जोगनाथ स्थानीय गुंडा है। वह हमेशा नशे में घूत रहता हैं। वैद्यजी का नौकर सनीचर उसका असली नाम मंगलदास है, लेकिन लोग उसे सनीचर कहते है। वैद्यजी द्वारा राजनीतिक का एक हिस्सा गाँव की कठपुतली प्रधान (नेता) बनाया गया है। इस उपन्यास में आम आदमी का प्रतीक लंगड़ पात्र अत्यंत निरीह किन्तु दृढ़ निश्चयी, लगभग सात वर्ष पहले दीवानी का एक मुकदमा दायर किया था। मुकदमें के लिए एक पुराने फैसले की नकल चाहिए थी, जिसके लिए तहसील में दरख्वास्त दी थी। नकलबाबू को पाँच हजार रूपये रिश्वत न देकर वह धर्म की लड़ाई से नकल लेने में जीवन पर्यन्त जूझता रहा।

श्रीलाल शुक्ल द्वारा विरचित रागदरबारी उपन्यास को पचास साल हो गया श्रीलाल शुक्ल इस दुनिया में नहीं है, परन्तु इस उपन्यास की दुनिया ही हमारी आस–पास की दुनिया हैं। रागदरबारी का प्रकाशन 1968 में हुआ। 1970 में उसे साहित्य अकादामिक पुरस्कार मिली। लाखों करोड़ों लोगों ने इस किताब को पढ़ी होगी या जो लोग नहीं भी पढ़े होंगे वे लोग भी उसी व्यवस्था का सचित्र अनुभव हर रोज करते है, जो रागदरबारी का एक अंश है। आज जो दुनिया हमें देखने को मिल रही है उसका वे पचास साल पहले ही दर्ज कर चुके थे। लेखक द्वारा समकालीन स्थानीय विकास व्यवस्था की ओर संकेतित करते हुए उपन्यास का एक अंश ''ये कॉलेज प्रायः किसी स्थानीय जननायक के प्रेरणा से शिक्षा प्रचार के लिए और वास्तव में उसके लिए विधानसभा या लोकसभा चुनावों की जमीन तैयार करने के उद्देश्य से, खोले जाते थे और उनका मुख्य कार्य कुछ मास्टरों और सरकारी अनुदानों का शोषण करना था। ये कॉलेज सिर्फ जमाने के फैशन के हिसाब से बिना आगे–पीछे सोचे हुए चलाये जा रहे थे और यह निश्चित था किवहॉ पढ़नेवाले लड़के अपने रिआयावाली हैसियत छोड़कर कभी ऊपर जाने की कोशिश करेंगें और ऊँची नौकरियों और व्यवसाय जिनके हाथों में है, उनके एकाधिकार का इन कॉलेजों की ओर से कोई खतरा नहीं पैदा होगा।

(पेज नं0 232–233) (3)

उपरोक्त उपन्यास के अंश की तरह क्या ? आज के राजनीतिक चेतना का विकासशील विद्यालय नहीं है? आज भी विद्यालय ही नहीं भारतीय विश्वविद्यालयों में भी ऐसी स्थितियाँ है जहाँ तीन साल का स्नातक पाचँ साल में पूरी होती हैं। कॉलेजों में पढ़ाई के नाम पर केवल फार्म भरे जाते हैं। इसकी वजह रागदरबारी के अमेन्द्र यादव की तरह छात्र नेता का चुनाव व हड़ताल बताया जाता है। प्रस्तुत संदर्भ में उपन्यास का एक अंश–''डिण्टी डायरेक्टर प्रिंसिपल से कहता है कि तुम्हारे

कॉलेज तो बहुत अच्छा है। तुम कहते हो कि वहॉ पर सिर्फ गुटबंदी है लड़कों की पढ़ाई ठीक से नहीं होती हिसाब किताब गड़बड़ है। इम्तिहान में नकल कराई जाती हैं। फिर प्रिसिपल तुम लोगों से दुर्व्यवहार करता है। तो भैया जी यह भी कोई बात हुई ? यह सब तो सभी कॉलेजों में होता है। लड़कों की पढ़ाई तो कोई क्या करे? लड़के खुद नहीं पढ़ना चाहते, तो उन्हें कोई कैसे पढ़ाए। हमारे जमाने में अच्छे खानदान के लड़के पढ़ने आते थे ध्यान से पढ़ते थे अब भंगी चमारों के लड़के पढ़ने आते है तो पढ़ाई कहाँ से होगी ? तुम खुद बताओं ना भैयाजी'' (5) किस तरह से आज राजनेताओं की ओर से विकास के नाम पर विद्यालय महाविद्यालय जहाँ हमारे देश की भावी पीढ़ी के जीवन के साथ खिलवाड़ हो रहा है, इसे स्पष्ट रूप से देखा जा सकता हैं। नौकरी के नाम पर लाखों लाख पद खाली है और बेरोजगार पढ़े लिखें युवा इधर–उधर भटक रहे है। इन खाली पदों की भरने की याद सरकार को तभी आती है जब चुनावी दौड़ पास हो। विपक्षी सरकार यह दावा करती है, कि ''मैं सत्ता में आऊँगा तो सभी युवाओं को नौकरी दी जाएगी।'' बस राजनेताओं को चुनावी दौड़ में ही जनता की याद आती है। स्वास्थ्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में भी लाखों पद खाली है। यदि जिसकी परीक्षाएँ होती भी है तो वह सही तरह कारगर नहीं होती और वह कोर्ट, केस या अदालत में चली जाती है। सामाचार पत्रों और खबरों के आकड़े बताते है कि केन्द्रीय विश्वविद्यालय में भी हजारों पद खाली है। हिन्दुस्तान टाइम्स में 8 मार्च 2019 को यह खबरे छपी है, कि ओडिशा सेंट्रल युनिवर्सिटी में 88 प्रतिशत पद इलाहाबाद में 67 प्रतिशत दिल्ली में 47 प्रतिशत पद खाली हैं।

इन पदों के खाली होने या इनके फलस्वरूप स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी मूलभूत आवयकताओं पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? इससे रागदरबारी के वैद्यजी का प्रतिनिधित्व करते इन नेताओं को कोई मतलब नहीं। अब बस चल चुकी है चुनावी दौड़ के शब्द और उसकी हवा जिसमें चुनावी शब्दों और उसकी, शब्दकोश की भाषा पर ध्यान दिये जा रहे है कि कही मेरी शब्दकोश की भाषा चुनावी दौड़ में अधूरी न रह जाए–''बेरोजगारो को रोजगार मिलेगा स्वास्थ्य शिक्षा आर्थिक, सामाजिक रूप से सभी को मजबूती प्रदान की जाएगी समाज से भ्रष्ट और भ्रष्टाचार को मिटाया जाएगा, देश के भावी पीढ़ियों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया जाएगा।'' आज जनता को भले ही ये सब नसीब न हो, पर राजनीतिक पार्टियों का शुद्ध व्याकरण और जुमलेवाजी समझ में आ रही है जो पार्टियाँ एक दूसरे पर कीचड़ उछालने की खोज कर रही है। आज की राजनीतिक व्यवस्था पर नागार्जुन जी की काव्य पंक्ति प्रासंगिक है–

''पाँच वर्ष की बनी योजना एक दो नहीं तीन,
कागज के फूलों ने ली है सबकी खुशबू छीन।
बलीहारी कागजी खुशी के क्यों न बजाए बीन,
फटे बाँध से बालू बोले हम भी हैं स्वाधीन।
अश्वमेघ का घोड़ा निकला चित्त है चारो नाल,
कौन कहेगा आजादी के बीते तेरह साल।।

(6) बीते तरह साल नार्गाजुन र0 न0 पृ0 337–338

आज हमारे आजादी के बासठ साल पूरा होने को है, पर हमारा देश आज भी, उन सपनों को पूरा नहीं कर सका है जिसक सपना हमारे देश के क्रांतिकारी वीर सपूतों ने देखी थी, या फिर हमारे देश के उदार नेताओं ने राजनीति के अर्थ को परिभाषित किया था। राजनीति शब्द दो शब्दों के मेल से बनी है, पहला राज्य और दूसरा नीति अर्थात्, ऐसी नीति जो नैतिकता पर आधारित हो। यह नैतिकता मानव मूल्यों का धरोहर है जो मानवता की स्थापना करती है। राजनीति और प्रशासन का संबंध चोली–दामन की होती है, तो भला भ्रष्ट राजनीति में सुशासन व्यवस्था और मानवता की कामना हम कैसे कर सकते हैं? प्रस्तुत संदर्भ में कालाबाजारी पर रागदरबारी का एक अंश–''दुकान पर पान–बीड़ी से लेकर आटा दाल, चावल, गरम मसाला आदि वह सब कुछ था जो 'खुलेआम' खरीदा और बेचा जाता हैं। यह तो राजनीति का वह पटल था। जो मेनिफेस्ट्रो में लिखा जाता है। इसके बाद वह पहलू आता था जो पार्टी को बैठकों में गुप्त मंत्रणा के रूप में प्रकट होता है और जो सिर्फ विश्वस्त सूत्रों को ही मालूम हो पाता है। उसके भीतर वे चीजे आती थी जो न खुलेआम खरीदी जाती थी न बेची जाती थी, पर खाई जा सकती थी। इस कोटि के माल में बहुत सी अंग्रेजी दवाईयॉ थी, जिनका उद्गम स्थानीय अस्पताल के स्टोर में था। इन्हीं में पाउडर वाले अमेरिकी दूध के डिब्बे थे, जिनका उद्गम स्थानीय प्राइमरी स्कूल में था। इसी तरह के पदार्थों में कुछ वे पदार्थ आते थे जो सिर्फ छिपकर खरीदी जा सकती थी और छिप कर ही इस्तेमाल हो सकती थी। इनमें गांजा भांग और चरस थी।''[7] आज हमारे युग की राजनीतिक चेतना ही बदल चुकी है, आज राजनीतिक को एक गंदा खेल के रूप में देखा जाता है जिसका विवेचित अंश रंगनाथ के माध्यम से किया है ''सनीचर की विजय के दिन उसने बहुत सोच डाला और उस दिन उसे प्रदेश की राजधानियों में न जाने कितने बैद्यजी और मंत्रियों, मुख्यमंत्रियों के कतार में न जाने कितने सनीचर घुसे दिखे'' प्रस्तुत उपन्यास के रंगनाथ की तरह आज के युवा पीढ़ी राजनीति के भ्रष्ट व्यवस्था देख राजनीति के प्रति उत्सुक नहीं है जिसके कारण राजनीतिक मे इनकी सक्रिय भूमिका दिखाई नहीं देती।

सुझाव

राजनीतिक की सही परिभाषा–''ऐसी नीति जो राज्य को सुव्यवस्थित सुसंगठित सुचारू रूप से चला सके।'' राजनीतिक के लिए सबसे पहले अपने आपको नीतिगत करना होगा। अर्थात् अपने आहार विहार व्यवहार आचरण को नीतिगत करनी होगी, क्योंकि व्यक्ति से घर–घर से गाँव–गाँव से समाज–समाज से देश को नीतिगत किया जा सकता है। इस चैनल का प्रथम भोक्ता वह व्यक्ति ही है, जिसपर हमारा देश ही नहीं बल्कि पूरा विश्व आधारित है, जिसे चुनकर जनता राजनेता बनाती है। यदि हमें देश में सुख शान्ति समृद्धि लाना है तो "जिसकी लाठी उसकी भैस'' वाली कहावत को समाप्त करना होगा क्योंकि हमारे देश में शिक्षाविद जन नेता नहीं बल्कि वैसे राजनेताओं की भरमार हैं जो शिक्षा के नाम पर केवल साक्षर है और लाठी डंडे, चंद सिक्कों के बल पर

राजनेता बने है। हमें देश की इस विडम्बना से अवगत होना होगा कि, जो हमारे ऊपर शासन करने वाला हैं, सारे देश को अपनी सझ–बूझ से चलाने वाला है। उसकी कोई न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता निर्धारित नहीं है। हमारे देश में साधारण से चपरासी के लिए शैक्षणिक योग्यता निर्धारित है, पर एक आई0पी0एस0 डॉक्टर, इंजीनियर, किसान, कवि कलाकार देश के महान विद्वान आदि जो हमारे देश की प्रगतिशीलता का सूचक है, उन पर शासन करने वाले राजनेताओं की उम्मीदवारी का कोई शैक्षणिक योग्यता नहीं हैं। यदि उम्मीदवारों की न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता निर्धारित कर दी जाए तो सुशिक्षित उम्मीदवार ही चुनाव लड़ेगें और चुनाव को भी निष्पक्ष किया जाय जहॉ रूपये–पैसे, साड़ी, शराब आदि प्रलोभनों के द्वारा चुनावी एजन्डे भोली–भाली सामान्य जनता को खरीद न सके, जो तुच्छ लालच में आकर अपनी किमती मतदान को न दे और भ्रष्ट नेता न चुना जाए। चुनाव के प्रक्रिया को ऐसे बनाना जाय कि जो जहॉ रहे वहीं से अपना मतदान दे सकें क्योंकि हमारे देश के अधिकतर सुशिक्षित वर्ग अपनी पढ़ाई–लिखाई, नौकरी पेशा के लिए देश–प्रदेश में होते है और उनका मतदान नहीं होता।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः उपरोक्त विवेचना के आधार पर देखा गया कि रागदरबारी में चित्रित स्वातंत्र्योत्तर भारत का यथार्थ सामाजिक राजनीतिक परिवेश में व्याप्त है। स्वतंत्रता के पश्चात जवाहर लाल नेहरू की विदेशनीति के तहत गुटनीरपेक्षता कोलम्बो पलान, बांडुंग कान्फ्रेस, सह अस्तित्व, पंचशील भारत–चीन, भारत रूस संबंध आदि से जुड़े हुए आर्थिक राजनीतिक परिदृश्य पर भी विचार किया गया है। इस संदर्भ में भारत की स्वीधान किया गया है। इस संदर्भ में भारत की स्वाधीन सरकार द्वारा अपनायी गयी मिश्रित अर्थव्यवस्था की आड़ में देश के विकास के लिए जो पूँजी वादी रास्ता अपनाया गया उसकी कृतियों में विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्र में उपस्थित आर्थिक बदहाली को भी रेखांकित किया गया है। इस दृष्टि से एक महत्वपूर्ण तथ्य जो उभर कर सामने आता है, स्वाधीनता आन्दोलन की महत्वपूर्ण शक्ति बहुसंख्यक जनता का शासन–सत्ता से अलगाव फलस्वरूप पंचवर्षीय योजनाओं, पंचायत–व्यवस्था, जमींदारी उन्मूलन सामुदायिक विकास योजनाओं आदि का वास्तविक लाभ साधारण जनता तक नहीं पहुँता। इसका वास्तविक लाभ बिचौलियों और सम्पन्न वर्गों तक ही सीमित रहा। प्रशासनिक स्तर पर वित्त, स्वास्थ्य सहकारिता आदि मंत्रालयों से संबद्ध होने के कारण ही श्रीलाल शुक्ल ने इसे बहुत गहराई से अपने रागदरबारी, उपन्यास में अभिव्यक्त किया हैं। वस्तुतः आज भी हमारा भारतीय समाज राजनीतिक–समाजिक व्यवस्था की विसंगतियों का प्रतीक बना हुआ है। रागदरबारी आज भी राजनीतिक चेतना का स्वरूप हैं। इस रागदरबारी को बदलने के लिए सुयोग्य सुशिक्षित राजनेता को आना होगा जो गणतंत्र की स्थापना कर सके, जिसकी सपने हमारे देशवासी देखते आ रहे है–

'' बात ही बात में विश्वास बदल जाता हैं ,
रात ही रात में इतिहास बदल जाता हैं,
सुयोग्य सुशिक्षित राजनेता हो, तो देश क्या ?
सारी दुनिया बदल सकता है।।''

संदर्भ ग्रंथ सूची

हिन्दी संत साहित्य के स्त्रोंत, विनीता कुमारी–संजय प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ 325

सुरंग में सुबह उपन्यार्स मिथिलेश्वर, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली पृष्ठ–336

राजदरबारी उपन्यास–श्री लाल शुक्ल–राजकमल प्रकाशन–नई दिल्ली

हिन्दी उपन्यास का इतिहास–गोपाल राय नई दिल्ली राजकमल प्रकाशन 2014 ई0 पृष्ठ सं0–260 ISBN–978–81–267–1728–6

राबदरआरी का महत्व सम्पादक–मधुरेश–लोकभारती प्रकाशन 2015 ई0 ISBN–9788180319860

रागदरबारीःआलोचला की फांस–रेखा अवस्थी–राजकमल प्रकाशन 2014 ई0 ISBN–9788126726332